अंजू खरबन्दा

ई-मेल-anjukharbanda401@gmail.com

स्वाद

"चलो दीदी अब गोलगप्पे खाते हैं!"

कमला नगर में शॉपिंग करते हुए लीना ने दीदी का हाथ थामते हुए कहा।

"सच मन कर ही रहा था कुछ चटपटा खाने का !"

दोनों बहनें गोलगप्पे की रेहड़ी पर पहुँची तो वहाँ पहले से ही एक नया-नवेला शादीशुदा जोड़ा खड़ा बतिया रहा था।

"हाँ-हाँ, गोलगप्पे भी खाना और आइसक्रीम भी! चालीस रुपये हैं मेरे पास ! दोनों चीजें आ जाएंगी आराम से ! दस-दस के गोलगप्पे खाएंगे और दस-दस की आइसक्रीम !"

कहते हुए नवयुवक हँस दिया धीरे से। दोनों मनपसंद चीजें एक साथ मिलने वाली हैं, ये सोचकर ही नई नवेली पत्नी की आँखें चमक उठी और उसके होठों की मुस्कान भी एकाएक चौड़ी हो गई।

गोलगप्पे वाले भैया ने सभी को एक-एक दोना पकड़ाया और एक के बाद एक गोलगप्पे सर्व करने लगा।

पाँच गोलगप्पे हो जाने पर वह बोला,

"लो जी एक-एक प्लेट हो गई ! और खिलाऊं?"

"बस भैया!" सभी ने समवेत स्वर में कहा।

"भैया जी कितने पैसे हुए?"

नवयुवक ने जेब की ओर हाथ बढ़ाते हुए उत्साह से भर पूछा।

"चालीस !"

"चालीस!" अचानक चटपटे गोलगप्पों का स्वाद उसकी जीभ से गायब हो गया। बेबस आँखों से उसने पत्नी की ओर देखा। पत्नी एकटक उसी की ओर ही देख रही थी। जहाँ शब्द हार मानते है वहाँ मौन मुखर हो उठता है।

"पहले रेट पूछ लिया होता तो एक ही प्लेट गोलगप्पे खाते !"

इतने में दीदी ने गोलगप्पे वाले भैया को एक सौ का नोट देते हुए कहा, "भैया ! इसमें से हमारे और इनके पैसे काट लो।"

दोनों ने एक साथ चौंक कर दीदी की ओर देखा,

"आज के गोलगप्पे हमारी तरफ से!"

कहते हुए दीदी ने नवयौवना के गाल धीरे से थपथपा दिए।

दोनों पल भर को गहरी चुप्पी में डूबे रहे। अगले ही पल आह्लादित हो पत्नी ने पति का हाथ पकड़ा और दोनों मानो उड़ते हुए सामने खड़ी आइसक्रीम की रेहड़ी पर जा पहुँचे।

लव बड्र्स को चहकता देख गोलगप्पे का चटपटा स्वाद जीभ से होते हुए हृदय तक जा पहुँचा था।